

मध्यएसिया का इतिहास

खण्ड २

राहुल सांकृत्यायन

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्,
पटना

प्रकाशक

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना

प्रथम संस्करण

वि० सं० २०१४, शकाब्द १८७९, मन् १९५७ ई०

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य

सजिव २०००

मुद्रक

एच० एम० कामथ

नशनल हेराल्ड प्रेस,

लखनऊ

समर्पण

परंगत डा० काशीप्रसाद जायसवालको
जिनकी स्मृति अठारह वर्षोंके अनन्त विरोगके बाद भी
मेरे जीवन की प्रिय निधि है

वक्तव्य

इस पुस्तक के प्रथम खण्ड के 'वक्तव्य' में यह निवेदन किया जा चुका है कि परिषद् ने इसका प्रकाशन किस परिस्थिति में क्यों स्वीकृत किया था और इसकी मुद्रणशैली में परिषद् की नियम-परम्परा से कुछ भिन्नता होने का कारण क्या है ;

प्रस्तुत खंड की छपाई १९५४ ई० में ही शुरू हो गई थी। पहला खंड इसके बाद छपने लगा और इससे एक वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हो गया। इस खंड के प्रकाशन में अनिवार्य कारणों से विलम्ब तो हुआ, पर कठिनाइयों को देखते हुए विलम्ब स्वाभाविक जान पड़ता है। विज्ञ पाठक इस बात का अनुमान कर सकते हैं।

पहले खण्ड से इस खण्ड का आकार डेढ़ा है। दोनों खण्ड मिलकर यह इतिहास एक हजार पृष्ठों से अधिक का हुआ है। इसकी विशालता के अनुसार लेखक की श्रमशीलता का अनुमान भी पाठक अनायास कर सकते हैं।

श्री राहुल जी की साहित्यसेवा पर विचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने साहित्य के विभिन्न विषयों पर जितना अधिक लिखा है, उतना दूसरा कोई एक साहित्यसेवी अब तक नहीं लिख सका है। उन्हें केवल उद्भट लेखक न मानकर एक सुप्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था ही मानना उपयुक्त होगा। उनकी नई खोज और नई प्रतिभा की न देसे हुई हिन्दी-साहित्य की समृद्धि शायद उल्लेखनीय है।

वर्तमान युग की अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में एशिया का महत्त्व दिन-दिन बढ़ रहा है। उसमें भी मध्य एशिया के साथ भारत के ऐतिहासिक सम्पर्क की प्राचीनता पर ध्यान देने से इस इतिहास की उपायता और भी बढ़ जाती है। इसकी प्रामाणिकता का अनुभव स्वयं पाठक ही कर सकते हैं, क्योंकि श्री राहुलजी के बहुवर्षव्यापी मौलिक अनुसन्धान के परिणाम-स्वरूप यह इतिहास तैयार हुआ है। अतः आशा है कि इससे हिन्दी के चिरकालानुभूत अभाव की पूर्ति होगी।

कार्तिक-पूर्णिमा, शकाब्द १८७९

नवम्बर, १९५८ ई०

शिवपूजन सहाय

(संचालक)

प्रस्तावना

पुस्तकके अंतिम खंडको पाठकोंके हाथ में जाते देखकर, मालूम होता है, एक बड़ा भार सिर से उतर गया। इस सारे समयमें कई बार आशा और निराशाके बीचमें भटकना पड़ा था। बाधाएँ कभी प्रकाशकर्ता औरसे और कभी प्रेसकी औरसे आ जाती थीं। एक प्रेसमें प्रथम खंडके आठ-दस फार्म कंपोज हो जानेके बाद काम रुक गया, और अंतमें प्रकाशक बदलने पर ही गाड़ी आगे चली। द्वितीय खंडको मैंने स्वयं कागज दे कर अपनी जिम्मेदारीपर प्रेसमें दे दिया, पर प्रेसकी गड़बड़ी इतनी हो गई, कि आशा नहीं थी, नया पार होगी। खैर, “कुफ टूटा खुदा-खुदा करके”। ऐसी बाधाएँ उपस्थित न हुई होतीं, तो ग्रंथ तीन साल पहले ही प्रकाशित हो गया होता।

मध्य-एशियाके इतिहासपर किसी भी भाषामें कोई विस्तृत ग्रंथ नहीं है। जो एकाध है भी, वह बहुत संक्षिप्त तथा कालमें बहुत दूरतक हमें नहीं ले जाते, और न वह आधुनिकतम सामग्रीपर आधारित है। मध्य-एशियाके इतिहासकी सामग्रीकी गवेषणा सोवियत रूसमें बहुत हुई है। किसी-किसी कालपर ग्रंथ भी लिखे गये, पर संपूर्ण कालके ऊपर लिखनेको आगेके लिये छोड़ दिया गया। इन बातों से लेखककी कठिनाई मालूम होगी। इस ग्रंथमें अनेक त्रुटियाँ होनी बिल्कुल संभव है। १९४७ के बाद की उल्लेख सामग्रीका बहुत कम उपयोग मैंने कर पाया है। भारत में सोवियतमें प्रकाशित ग्रंथ और अनुसंधान-पत्रिकाएँ मुलभ नहीं हैं।

मध्य-एशियामें चीनी मध्य-एशिया भी शामिल है। जिसके किसी-किसी कालपर इस ग्रंथमें काफी विवेचन हुआ है, पर पूरी तीरसे लिखना बाकी है। मेरी इच्छा तिब्बत को लेते चीनके इतिहासपर एक विस्तृत ग्रंथ लिखनेकी है। यदि उसके लिखनेमें सफल हुआ, तो यह कमी पूरी हो जायगी। पर, इसमें आधु और भौतिक बाधाएँ ही रास्ता रोके नहीं हैं, बल्कि हमारे स्वतंत्र देशकी नीकरशाही भी पूरी तीरसे रोड़ा अटकाने के लिये तैयार है। अंग्रेजी शासनमें सिर्फ पहली बार मुझे छपकर तिब्बत जानेकी जरूरत पड़ी थी। मेरे राजनीतिक विचार उस वक़्त भी वही थे, जो आज हैं। पर, अंग्रेजी सरकार और अंग्रेज नीकरशाहीोंने सांस्कृतिक कार्यके महत्वको समझते बाधा नहीं दी।

१९३४ ई० में मैं दूसरी बार तिब्बत जानेके लिये ब्रिटिश पोलिटिकल एजेंट के पास गंतोकेमें आज्ञापत्र लेने गया। नाम मालूम होते ही वह बड़े हर्षके साथ मिले। और आज्ञापत्र ही नहीं दिया, बल्कि अधिक आत्मीयता दिखलाने के लिये तिब्बतमें अपने लिये टुए फोटो दिखलाये, कितनी ही बातें पूर्ण। उसीके स्थानपर १९५० में जो भारतीय सज्जन थे, वह मिलनेपर बिलकुल दूसरे ही साबित हुए। उन्हें तिब्बतके बारेमें कोई जिज्ञासा नहीं थी, और शिष्टाचारके नाते ही एक-दो मिनटके लिये मिले। नीकरशाही ने एक बार पासपोर्ट देनेसे इन्कार किया, खैर, दूसरी बार कोशिश करने पर वह मिल गया। उसके लिये बड़ी उत्सुकता इसी कारण है, कि तिब्बतमें भारतीय संस्कृत-ग्रंथोंकी नई तालप्रतियोंके मिलनेकी संभावना है।

ग्रंथके प्रकाशित होनेका सबसे अधिक श्रेय श्रीजगदीशचंद्र माथुर (तत्कालीन शिक्षा-परिवर्त, बिहार) और श्री शिवपूजन सहाय को है। शिवपूजन बाबू तो ग्रंथको प्रकाशित देखनेके लिये मुझसे भी अधिक उतावले थे।

मंसूरी,

२०-९-५७

राहुल सांकृत्यायन

विषय-सूची

अध्याय

पृष्ठ अध्याय

पृष्ठ

भाग १

उत्तरापथ (१२००-१५५० ई०)

१. चीनमें मंगोल-वंश (१२००-१३६८ ई०) ३	
१. छिङ्ग-गिस्	३
२. उगेनाइ (ताइ-चुङ्ग)	४
३. गु-युग, गो-वान (विङ्ग-चुङ्ग)	६
४. मुङ्ग-ये (स्यान्-चुङ्ग)	७
५. कुबिलेइ (शि-चु)	७
(१) मार्को पोलो	१०
(२) जाति-व्यवस्था	१२
६. थुगु-थेमुर (वेङ्ग-चुङ्ग)	१४
७. खु-चुग (बु-चुङ्ग)	१४
८. बीगन् थू (जुन्-चुङ्ग)	१५
९. गेगेन्, शु-तु-फल (पिङ्ग-चुङ्ग)	१५
१०. यिगु-थेमुर (ताइ-चिङ्ग-ति)	"
११. रिन्-छेन्-फगु, (यू-चू)	"
१२. कुसलः (मिङ्ग-तिङ्ग)	"
१३. थुगु-थेमुर (वेन्-चुङ्ग)	१६
१४. रिन्-छेन्-पल् (निङ्ग-चुङ्ग)	१६
१५. थेगन्-थेमुर (शुङ्ग-ति)	१६
वंश-वृक्ष	१७
२. मुवर्ण-ओर्दू (१२२४-१३७५ ई०) १८	
१. जू-छि (तू-शि)	१८
२. वा-तू खान, जू-छि-पुत्र	२०
(क) बाश्किर-विजय	२१
(ख) वोल्गार-विजय	२१
(ग) सकमिन-विजय	२२
(घ) मास्को-विजय	२२
(ङ) कियेफ-विजय	२२
(च) यूरोप-विजय	२३

मंगोल-हथियार

३. सरतक	२४
४. उलकची	२६
५. ब्रेरेक (बरका)	२६
६. मङ्ग-गू-ते (मुङ्ग-खे) तेमूर	२९
७. तुदा-मङ्गू	२९
८. तांगताइ	२९
नांगाइके साथ संघर्ष	३०
९. उज्वेक खान	३१
(१) आपसी संघर्ष	३१
(२) यूरोपपर अभियान	३४
(३) मास्को राजुल	३४
(४) इस्लामसे सहानुभूति	३६
१०. दिनीबेग	३८
११. जानीबेग	३८
(१) प्लेग महामारी	३८
(२) ईरानपर आक्रमण	३९
१२. बरदीबेग	४२
१३. किलदीबेग	४२
१४. नौरोजबेग	४२
१५. चेरकेसबेग	४२
१६. ओर्दा शेख	४३
१७. खिजिर	४३
१८. कुलफा	४३
१९. तेमूरखोजा	४३
२०. मुरीद	४३
२१. अजीज	४३
२२. हाजीखां	४३
वंश-वृक्ष	
३. श्वेत-ओर्दू (१२२४-१४२५ ई०) ४५	
१. जू-छि	४५

अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
२. ओरदा, एसन	४६	वंशवृक्ष	७०
३. कोनिचि	४६	४. रुस रुरिक-वंश (९११-१५४४ ई०)	७१
४. बायन	४७	अवतरणिका	७१
५. ससीबूगा	४८	शक-सरमात	७१
६. एर्जेन	४८	वेन्द	७१
७. मुबारक खोजा	४८	अंत	७१
८. चमिताई	४८	रुसोके पड़ोसी मंगोलायिन	७३
९. उरुस खान	४८	बोलगार	७३
१०. तोगताकिया]	५०	खाज्जार	७४
११. तेमूरबेग	५०	पेचेनेगा	७५
१२. तोकतामिश	५१	क. क्रियेफके राजुल	७५
मास्को-ध्वंस	५१	१. रुरिक	७५
तेमूरके साथ लड़ाइयां	५५	२. ओलेग	७७
प्रथम महाभियान	५६	३. ईगर	७८
द्वितीय अभियान	६०	४. ओलगा, ईगर पत्नी	८२
१३. कोइरिअक	६२	५. स्व्यातोस्लाव I	८२
१४. तेमूर कुतुलुक	६२	६. ब्लादिमिर	८३
१५. शादीबेक	६३	ईसाई-धर्म स्वीकार	८३
१६. पूलाद खान	६३	७. स्व्यातोपोल्क	८४
१७. तेमूर खान	६४	८. यारोस्लाव I	८४
१८. जलालुद्दीन जलाबेदी	६५	"रुसक्या प्राव्दा"	८५
१९. करीमबदी	६५	९. इर्यास्लाव	८६
२०. चिङ्ग-गिज ओगलान	६५	स्व्यातोस्लाव	८७
२१. जब्बार बदी	६६	१०. स्व्यातोपोल्क	८७
२२. दर्विस खान	६६	११. ब्लादिमिर मनोमाख	८७
२३. चकरा खान	६६	"ईगर-सेना-गाथा"	८९
२४. किवेक	६६	ख. रोस्तोफ-सुज्दल-राजुल	९०
२५. उलुक मोहम्मद	६७	१२. यूरी I दीर्घबाहु	९०
२६. सैयद अहमद	६७	१३. अन्द्रेइ बगोल्गुवोव्स्की	९१
२७. मोहम्मद	६७	१४. व्सेवोलद	९१
बोरक (बुराकि)	६८	१५. यूरी	९२
२८. मुहम्मद सुल्तान	६९	१६. यारोस्लाव	९२
२९. दौलत बदी	६९	नवोगोरद	९३
३०. कादिर बदी	६९	१७. अलेक्सान्द्र नेव्स्की	९५
३१. शादी बेक	६९	ग. मास्को महाराजुल	९६
३२. सैयद (सैदक)	६९	१८. दानियल	९६
३३. कासिम	६९	२०. इवान I (खलीता)	९७
३४. अकनजर, हकनजर	७०	२१. सेमोन	९७

अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
२२. इवान II	९७	१६. तुवा (दुवा) तेमूर	१३४
२३. दिमित्रि दोन्स्की	९८	१७. तरमाशेरिन (घर्म-छे-रिङ्ग)	१३४
२४. वासिली	९९	१८. बूजन	१३५
२५. वासिली II अंध	९९	१९. जेकिश	१३५
२६. इवान III	९९	२०. येस्मुन तेमूर	१३६
मंगोल शासन समाप्ति	१००	२१. अली सुल्तान	१३६
तुर्की	१००	२२. मुहम्मद पुलाद	१३६
अफनासीकी भारत-यात्रा	१०१	२३. काजान (गाजान)	१३६
२७. वासिली III	१०६	२४. दानिशमंद	१३६
२८. येलेना	१०६	२५. बायन कुल्ली	१३६
२९. इवान IV		२६. तेमूरशाह	१३६
राज्य-विस्तार	१०७	२७. इलियास खोजा	१३७
येरमक द्वारा साइबेरिया-विजय	१०९	२८. काबिलशाह	१३७
३०. फ्यादर	११५	चगताई-अर्थ-नीति	१३७
वंशवृक्ष	११७	साहित्य	१३७
		वंशवृक्ष	१३८

भाग २

दक्षिणापथ (१२२४-१७४३ ई०)

१. चगताई वंश (१२२२-१३७० ई०)	१२१
१. जगताई	१२१
बुगारा-विद्रोह	१२१
राजावलि	१२५
२. करा हलाकू	१२६
३. येरमु मड-गू	१२६
करा हलाकू	१२७
४. एरमेना	१२७
५. अलगू (अरिकबुगा)	१२८
६. मुबारकशाह	१२९
७. बोरक	१२९
८. निगमई	१३१
९. तोका तेमूर	१३१
१०. दुवा (दावा)	१३१
११. कुजेक (कंचोक)	१३३
१२. तलिकू (विजिर)	१३३
१३. केवेक	१३३
१४. एमेनबुगा	१३३
केवेक (पुनः)	१३४
१५. इलिकदई	१३४

२. हलाकू-वंश (१२५६-१३४५ ई०)

राजावलि	१३९
१. हलाकू, खुलागू	१३९
२. अबका	१४३
३. अहमद तगूदर, निकोदर	१४३
४. अरगून	१४३
५. गैखातू	१४४
६. बैदू	१४४
७. गाजन	१४४
८. उल्जैतू (खुदाबन्दा)	१४५
९. अबूसईद	१४५
वंशवृक्ष	१४७
हजारा	१४७
साहित्य	१४७
३. तेमूर-वंश (१३७०-१५०० ई०)	१४८
१. तेमूरलंग	१४८
तोकतामिशपर आक्रमण	१५०
भारतपर आक्रमण	१५१
तेमूरके उत्तराधिकारी	१५४
राजावलि	१५५
२. खलील सुल्तान	१५५
३. शाहख	१५५
४. उलुगबेग	१५७

अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
साहित्य	१५८	९. उबैदुल्ला I	१९२
५. अब्दुललतीफ	१५८	१०. अबुल्फैज	१९२
६. अब्दुल्ला	१५९	११. सैयद अब्दुल् मोनिन	१९४
७. अबूसइद	१५९	१२. सैयद उबैदुल्ला II	१९४
८. अहमद	१६०	१३. सैयद अबुल्गाजी	१९४
कवि नवाइ	१६०	वंशवृक्ष	१९५
९. सुल्तान मुहम्मद	१६२	६. खीवा-खान (१५१५-१७१४ ई०)	१९६
१०. बैसुंकर	१६२	१. इलवर्स	१९९
११. सुल्तान अली	१६३	२. सुल्तान हाजी	१९९
१२. जहीरुद्दीन बाबर	१६३	३. हसनकुल्ली	१९९
साहित्य और संस्कृति	१६३	४. सोफियान	१९९
वंशवृक्ष	१६४	५. बुजुगा	२००
४. शैबानी-वंश (१५००-१९ ई०')	१६५	६. अवानेक	२००
अबुल्खेर	१६५	७. काल	२०१
राजावलि	१६७	८. अकताई खान	२०१
१. मुहम्मद शैबानी	१६७	९. दोस्त खान	२०२
२. कुचुनजी	१७३	मुहम्मद	२०२
३. अबूसईद खान	१७७	१०. हाजिम मुहम्मद	२०५
४. उबैदुल्ला	१७८	जेन्किन्सन (अंग्रेजी यात्री).	२०५
५. अब्दुल्ला I	१७९	११. अरब मुहम्मद	२०६
६. अब्दुललतीफ	१७९	१२. इस्कन्दर	२०७
७. नौरोज मुहम्मद	१७९	१३. अबुल्गाजी	२०८
८. पीर मुहम्मद	१७९	१४. अनुशा मुहम्मद	२११
९. इस्कन्दर	१७९	१५. मुहम्मद एरेंक (ओरंग)	२१२
१०. अब्दुल्ला II	१८०	१६. शाहनियाज	२१२
११. अब्दुल मोनिन	१८२	१७. अरब मुहम्मद II	२१२
१२. पीर मुहम्मद	१८२	१८. हाजी मुहम्मद	२१२
साहित्य संस्कृति	१८३	१९. यादगार	२१२
वंशवृक्ष	१८३	वंशवृक्ष	२१२
५. अस्त्राखानी (१५९९-१७४७ ई०)	१८५		
१. दीन मुहम्मद	१८५		
राजावलि	१८६		
२. बाकी मुहम्मद	१८६		
३. वली मुहम्मद	१८६		
४. सैयद इमामकुल्ली	१८७		
५. सैयद नादिर, नाजिर	१८९		
६. सैयद अब्दुल अजीज	१९०		
७. सैयद सुभानकुल्ली	१९१		
८. मुकीम	१९२		
		भाग ३	
		उत्तरापथ (१५९-१८०१ ई०)	
		१. रुसका प्रसार (१५९८-१८०१ ई०)	२१७
		१. वीचके जार	२१७
		१. वोरिस गदुनोफ	२१७
		२. फ्योदोर	२१९
		३. दिमित्रि (मिथ्या)	२१९
		४. वासिली शुइस्की	२२०

अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
५. व्लादिस्लाव	२२१	१. बुरकि	२७५
२. रोमनोफ-वंश	२२४	२. गिराई	२७५
१. मिखाइल	२२५	३. बैरेंदक	२७७
चीनतक प्रसार	२२७	४. कासिम	२७७
२. अलेक्सी	२२७	५. मीमाश (बिनाश)	२७७
शासन-यंत्र	२२८	६. ताहिर	२७७
उकदन विलयन	२२९	७. उजियाक अहमद	२७८
बोल्गाकी-जातियां	२३४	८. अकनजर	२७८
राजिन-विद्रोह	२३५	९. शिगाई	२७९
साइबेरियामें प्रसार	२३८	१०. तववकल	२८०
चीनमें संबंध	२४१	११. इशिन	२८१
साइबेरियामें विद्रोह	२४४	१२. यमगीर, जहांगीर	२८२
साइबेरियामें रुसी बस्तियां	२४४	१३. तोफीक	२८२
३. फ्यादोर	२४५	वंशवृक्ष	२८३
४. इवान IV	२४६	३. नोगाई	२८४
५. पीतर I	२४६	१. नोगाइ (१३००-१७२४ ई०)	२८४
पूर्वमें प्रसार	२५१	१. नोगाई	२८४
शासन-यंत्र	२५१	२. चुको	२८४
मिक्षा और संवृत्ति	२५२	३. बुरी	२८५
पीतरवर्ग-निर्माण	२५२	४. कराकिज़िक	२८५
साइबेरिया	२५२	५. करा नोगाई	२८६
चीन के साथ संबंध	२५३	२. महानोगाई	२८६
६. एफ़ीरिया I	२५५	१. तुगदीन	२८६
७. पीतर II	२५६	२. ओकस	२८६
८. अक्ष	२५६	३. यमागुरची	२८६
९. इवान II	२५७	४. शेख ममाई	२८७
१०. एफ़िजावे	२५७	५. युमुफ मिर्जा	२८७
११. पीतर III	२५८	६. अली मिर्जा	२८७
१२. स्कॉरिया II	२५९	७. इस्माईल मिर्जा	२८७
प्रथम तुर्की युद्ध	२६०	८. दीनमुहम्मद	२८८
रिमान-संतान (गुगारेक)	२६१	९. उएस	२८९
इदेलिक सीमा	२६२	१०. अल्ता	२८९
चीनमें संबंध	२६३	३. कराकल्पक	२९०
मिक्षा और संवृत्ति	२६४	१. ऊपरी कराकल्पक	२९१
रूस प्रतियोगिताका गढ़	२६७	२. निचले कराकल्पक	२९१
१३. पावर I	२६८	वातिरखान काइफ	२९२
साइबेरियाकी जातियां	२७१	४. मुग़लिस्तान के खान (१३२१-१५६५ ई०)	२९३
२. श्वेत-आई (१४२५-१७०८ ई०)	२७५	राजावलि	२९५
राजावलि	२७५		

अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
१. तुगलक तेमूर	२९५	३. सेङ्ग-गे	३२८
२. इलियास खोजा	२९६	४. गल्दन I	३२८
३. खिजिर मुहम्मद	२९७	५. छेवङ्ग-रब्तन	३३०
४. शमाजहान	२९८	शासन-व्यवस्था	३३३
५. मुहम्मद	२९८	उपज	३३४
६. नक्शेजहान	२९९	६. गल्दन II छेरिङ्ग	२३४
७. शेरमुहम्मद	२९९	७. बायन	३३५
८. बेइस	३००	८. छेवङ्ग दोर्जे	३३५
९. शातुक	३०१	९. दावा छेरिङ्ग	३३५
१०. एसेनबुगा	३०१	१०. अमुरसना	३३६
११. दोस्तमुहम्मद	३०३	वंशवृक्ष	३३७
१२. यूनस	३०४	७. बोल्गा-कल्मक (१६१६-१७७१ ई०)	३३८
१३. महमूद	३०६	राजावलि	"
१४. मन्जूर	३०७	१. खुङ्ग थैची उर्लुक	"
१५. सईद	३०८	२. दै-शिङ्ग	"
तिब्बतपर जहाद	३११	३. फुन्-छोग	३३९
१६. रशीद	३१२	४. आयकम् थैची	"
१७. अब्दुल करीम	३१३	५. छेरिङ्ग दोण्डुव्	"
१८. मुहम्मद खान	३१३	६. दोण्डुव् अम्बो	"
१९. इस्माइल खान	३१३	७. दोण्डुव् थैची	"
वंशवृक्ष	३१४	८. उबासा	३४०
५. सिबिरखान (१५००-१६५९ ई०)	३१५	कल्मकोंका भागना	"
१. ईबक	३१५	वंशवृक्ष	३४२
२. मुर्तुजा	३१५	८. कजाक-ओर्दू (१७१८-१८१८ ई०)	३४३
३. कूचुम	३१६	क. मध्य-ओर्दू (१७१८-१८१९ ई०)	"
४. अली	३१८	१. पुलाद	"
५. इशिम	३१९	२. अबुल् मुहम्मद	३४५
६. अबलइ गिराई	३१९	३. अबलइ	३४६
७. दौलत गिराई	३१९	४. वली	३४८
वंशवृक्ष	३२०	ख. लबु-ओर्दू (१७४४-१८१८ ई०)	३५०
६. जुंगर-साम्राज्य (१५८२-१७५७ ई०)	३२१	१. अदिया	३५०
कल्मक-मंगोल	३२१	२. अबुल्खैर	"
मंगोल-राजावलि	३२१	३. नूरअली	३५३
अन्तर्-मंगोलिया	३२४	४. एरली	३५६
बाह्य-मंगोलिया	३२४	५. इशिम	३५७
कजाक	३२५	६. ऐचुवक	"
जुंगर-राजावलि	३२५	७. जंती उरा	"
१. खराखुल	३२५	८. शेरगाजी	"
२. बातुर थैची	३२५	वंशवृक्ष	३५८
		ग. महा-ओर्दू (१७४०-६० ई०)	"

अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
३. शाह मुराद (नगीबेला)	"	(३) बरखशां	४६२
४. हैदर	४४४	(क) मुल्तान भाट	"
शासन-प्रबंध	४४५	(ख) भीर महम्मद	"
वैदेशिक संबंध	"	(ग) भीर यारबेक	"
५. हुसेन	४४६	(घ) जहांगीर	"
६. उमर	"	(ङ) महम्मद	"
७. नसरुल्ला	"	(४) मेमना	"
अंग्रेजोंकी चालें	४४८	(५) अंदमुद	४६३
प्रथम अफगान-युद्ध	४५०	(६) शाबिरगान	"
८. सैयद मुजफ्फरुद्दीन	४५१	(७) सरीपुल	"
रूससे युद्ध	"	खिताके खान (१७१६-१८८१ ई०)	
९. अब्दुल अहद	४५३	१. बाहरी बंश	"
१०. भीर आलम	"	१. अरंक	"
शासन-प्रबंध	"	२. जेर गाजी	"
वंशवृक्ष	४५४	३. इल्बर्ग	४६७
४. छोटे-छोटे राज्य	४५५	४. ताहिर	४६८
१. उरातिप्पा और जीजक	"	५. अबुल् मुहम्मद	"
बाबा बेक, बेक मुराद	४५५	६. अबुल्गाजी II	"
२. शहरसब्ज	"	७. काश्ग	"
(१) दानियाल अतालीक	"	८. अबुल्गाजी III	४६९
(२) खोजाकुल	४५७	२. कंकुरल-बंश	४७०
(३) अशुर कुली बेक	"	राजावलि	"
(४) इस्कन्दर	"	१. इल्तजार	"
(५) बाबाबेक	"	२. महम्मद रहीम	४७१
३. कोहिरतान	४५७	३. अल्ला कुल	४७३
उरगुत	"	अराकल रूसी अभियान	४७४
४. हिसारके इलाके	४५८	४. रहीम कुल	४७६
(१) करातगनि	४५९	५. अमीन	"
(२) दरवाज	"	६. अबुल्ला	४७७
(३) कुलाब	"	७. कुतुलुक मुगद	"
(४) शगनान	"	८. सैयद मुहम्मद	"
(५) हिसार	"	मुहम्मद फना	४७९
५. तुखारिस्तान	"	९. मुहम्मद रहीम	"
(१) खुल्म	४६०	रूसी अभियान	४८०
खिलिच अली	"	वंशवृक्ष	४८७
(२) कुन्दुज	"	तुर्कमान	"
(क) मुराद बी	"	१. तुर्कमान भूमि	४८८
(ख) मुहम्मद अमीन	४७	२. तुर्कमान कबीले	४८९

अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
३. नेपाळों का शासन	४९१	(१) अनवर पाशा	५४२
४. पाशावा और स्वरसेवा	४९३	(२) ईशान मुल्तान	५४३
५. समय बज्ज	४९४	(३) फुजैल मकसूम	५४६
साइबेरिया और चीन	४८८	(४) इब्राहीम गल्लू	"
६. बर्दे-दीये मन्तानवी	४९७	३. ताजिकिस्तान गणराज्य	"
७. मेरु-निर्माण	४९९	६. तुर्कमानिस्तानमें क्रांति	
८. प्रजावाद	"		
९. भारत	५००	१. तुर्कमान कबीले	५४८

भाग ५

बोल्शेविक क्रांति (१९१७-२९ ई०)

१. रूसमें क्रांति

१. रूसमें बेनिन	५०३
२. पारेन-सीरी सरकार	५०४
निज्ने-नोवोरोसिया	५०७
३. सावनालीपर अधिकार	५०८
४. सावनालीपरीका मुक्ति	५११
५. इन्वैसिस्तानमें क्रांति	

१. उर्वरक क्रांति	५१४
२. उर्वरक भूमि	५१७
३. सोवियत-रुस	"
४. सोवियत प्रजास-संघ	५१९
५. सोवियत-प्रजास-संघाधिकारोंका अंत	५२०
६. रूसका-संविधान	५२४
७. रूसका-प्रतीक भंगा	५२५
८. उर्वरक क्रांति का निर्माण	६१७

३. कजाकस्तानमें क्रांति

१. कजाक क्रांति	५२८
२. १९१६ का विद्रोह	५३०
३. क्रांति-न्याय	५३२
४. सोवियत शासनकी स्थापना	५३४

४. ताजिकिस्तानमें क्रांति

१. ताजिक	५३५
२. १९१६ का विद्रोह	५३६
५. ताजिकिस्तानमें क्रांति	
१. सोवियतोंके बोज	५२९
२. बामन-नी-अली-अन	५४२

मान-चित्र

१. मंगोल-साम्राज्य	४
२. तातू-विजय	१९
३. मंगोल-वंशज	७२
४. रुसिक रुस	७८
५. मास्को-राज्य-विस्तार	९९
६. रुसिया	१०५
७. चंगताइ-राज्य	१२३
८. हुलाकू-राज्य	१४२
९. तेमूर-राज्य	१५२
१०. शीबानी-अस्त्राखानी राज्य	१७५
११. खीवा खान	१९८
१२. रुस (१७२१ ई०)	२३३
१३. साइबेरियामें विस्तार	२३९
१४. श्वेत ओर्दू	२७६
१५. जुंगर-साम्राज्य	२८५
१६. मुगोलिस्तान	२९४
१७. जुंगारिया	३२२
१८. मध्य-ओर्दू	३४४
१९. आरशारी प्रसार	४१८
२०. मध्य-एशिया (आधुनिक)	५०४-५

परिशिष्ट

१. रूसी भाषा और भारत	५५७
२. स्रोत ग्रंथ	५९३
३. नामानक्रमणी	६०३

■

■

मध्य एसिया का इतिहास

खण्ड २

भाग १

उत्तरापथ (१२००-१५५० ई०)

चीनमें मंगोल-वंश

(१२००-१३६८ ई०)

१. छिङ्ग-गिस् (१२०६-२७ ई०)

मध्य-एशियामें मंगोलोंका राज्य कोई अलग-थलग नहीं था, बल्कि कितने ही समय तक चीनपर शासन करनेवाले मंगोल हगान (खाकान, खान, खान) को ही सभी मंगोलखान अपना अधिराज मानते थे। १३ वीं सदीमें कोरियासे पोलंद और साइबेरियासे पंजाब तक मंगोलोंका साम्राज्य फैला हुआ था। छिङ्ग-गिस्ने अपने विशाल साम्राज्यको अपने जीवन हीमें चारों पुत्रोंमें बांट दिया था, लेकिन साथ ही यह व्यवस्था की थी, कि सभी खान अपनेमेंसे एकको अपने ऊपर मानते हुये साम्राज्यमें एक तरहकी एकता कायम रखें। घुमन्तू जातियोंमें एक तरहकी जनतंत्रता स्वाभाविक है। घुमन्तू राजा घुमन्तूओंकी अपनी जिस सेनाके बलपर देश-विजय करते हैं, उसे अपने पक्षमें रखनेके लिये सैनिक जनतंत्रता कायम रखना जरूरी है। अपने पूर्वज घुमन्तू-राज्योंकी भांति छिङ्ग-गिस्के साम्राज्यमें भी सैनिक जनतंत्रता थी। कोई बड़े सवालका हल, या खानका निर्वाचन कूरिल्ताईमें होता था, जो सभी राजकुमारों, सैनिक सरदारों और जन-नायकोंसे मिलकर बनी थी।

मध्य-एशियामें मंगोलोंके शासनके इतिहासके समझनेके लिये जरूरी है, कि हम चीनके मंगोल-राजवंशके इतिहासको भी समझें, साथ ही सुवर्ण-ओर्दू, और ईरानके खुलागू-वंशको भी हम नहीं छोड़ सकते। इन मक्का भैत्री या शत्रुताके रूपमें बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। तंगुत नगरके विजयके पवन छिङ्ग-गिस् आहत हुआ था, जिससे ही अपने चलते-फिरते प्रासाद या महा-गाड़ीपर ही वह १८ अगस्त १२२७ ई० को मर गया। दुनियामें और राजाओंको भी अपने पुत्रोंमें राजका बंटवारा करते हम देखते हैं, लेकिन उसका एकमात्र परिणाम उनका जल्दी ही छिन्न-भिन्न हो नष्ट होनेके सिवा और कुछ नहीं होता। छिङ्ग-गिस् युद्ध और शासनकी व्यवस्थामें अद्भुत प्रतिभा रखता था, इसलिये उसके बंटवारेने कोई उम तरहका दुष्परिणाम तुरंत नहीं दिखलाया और करीब-करीब १२९४ ई० तक खुविलेके शासनके अन्त तक मंगोल-साम्राज्य बहुत शक्तिशाली और एकतावद्ध रहा, जिसमें छिङ्ग-गिस्की दूरदर्शिताका हाथ भी था, इसमें संदेह नहीं। छिङ्ग-गिस्के मरनेके बादही मंगोल-विजययात्रा मन्द नहीं हुई। १२७९ ई० में सम्पूर्ण चीन, हिन्द-चीन और बर्मापर खुविले (कुविलेइ) का शासन स्थापित हुआ। पश्चिम-दक्षिणमें कितना राज्य-विस्तार हुआ, उसके बारेमें हम आगे कहेंगे। छिङ्ग-गिस्के मरनेके एक साल बाद (१२२८ ई० में) मंगोल-सेना ईरानमें अस्पृहान तक पहुंची थी।

छिङ्ग-गिस्की मृत्युके बाद तुरंत ही नये हगान (खान) का चुनाव नहीं हुआ। दो साल (१२२९-३०) तक छिङ्ग-गिस्-पुत्र तू-लुइ और उसकी रानीकी देख-रेखमें शासन होता रहा और इस सारे समयमें मंगोलोंकी शक्ति घटनेकी जगह बढ़ती ही रही, यह छिङ्ग-गिस्की व्यवस्थाका चमत्कार था।

चीनमें निम्न मंगोल खाकान हुये—

- | | |
|--|------------|
| १. छिङ्ग-गिस् (चिङ्ग-गीस, ताइ-चुङ्ग) | १२०६-२७ ई० |
| २. उगेताइ (ताइ-चुङ्ग छिङ्ग-गिस्)-पुत्र | १२२९-४६ " |
| ३. गू-युग (गोदन, उगेताइ-पुत्र चिङ्ग-चुङ्ग) | १२४६-५१ " |
| ४. मुङ्ग-खे (मङ्ग-गू थोलोइ-पुत्र स्यान्-चुङ्ग) | १२५१-५९ " |
| ५. कुविलेइ (ह्वी-विलेइ तू-लोइ-पुत्र, छिङ्ग-गिस्-पौत्र शिचुङ्ग) | १२६०-९४ " |

हुई थीं। १२५१ ई० में मंगोलोंने लाहौरको लूटा और जलाया, इस समय दिल्लीके तख्तपर नासिर खुसरू था।

४. मुङ्ग-खे, मङ्ग-गू, स्यान्-चुङ्ग (१२५१-५९ ई०)

मुङ्ग-खे थो (ता) लोङ्का पुत्र तथा खु-बि-लेई (कुबिलेइ) का अग्रज था। अबसे एक तरह सिंहासन थो-लोङ्की संतानमें चला गया। इन्हीं दोनों भाइयोंका छोटा भाई खु-ला-कू (हुलाकू) था, जिसने ईरान और मेसोपोतामियापर भी अपनी संतानों के लिये विजय प्राप्त की। १२५१ ई० में ही, जिस साल कि लाहौर का सर्वसंहार हुआ, मंगोल-सेनायें मेसोपोतामियामें प्रविष्ट हुईं, जहां उन्होंने दियारबेकर और मेयाफरकिनका सर्वसंहार किया। इसी समय उत्तराधिकारके लिये झगड़ेका परिणाम मंगोल-राज-कुमारोंमें वैमनस्यके रूपमें दिखलाई पड़ा, जिसके लिये १२५२ ई० में कूरिल्टाई बुलाई गई। इसी कूरिल्टाईमें जहां राजकुमारोंके मुकदमोंका फैसला किया, वहां जागीरों और अधिकारोंका बंटवारा भी किया। मुङ्ग-कुङ्ग-चुङ्ग-फू (शेन्सी), होनान् कुबिलेइ (हूबिलेइ) को जागीरमें मिले। उसे सुङ्ग-वंशके खिलाफ दक्षिण-चीन में अभियान करनेवाली सेनाका सेनापति भी नियुक्त किया गया। खाकानके दूसरे भाई खुलाकू (हुलाकू) को ईरानकी ओर बढ़नेका काम सौंपा गया, जिसकी सहायताके लिये कित्तू-बुकाका नियुक्त किया गया। लेकिन अभी खुलाकूकी दिग्विजय मध्य-एशियाके पहाड़ों ही तक सीमित थी।

सबसे कड़ा संघर्ष दक्षिणी चीनमें सुङ्ग-वंशके साथ होनेवाला था, जिसके लिये कुबिलेने बड़ी तैयारी (१२५३ ई०) की। शेन्सीमें उसने एक बड़ी सेना जमा की, लेकिन दक्षिणकी ओर बढ़नेमें जल्दी नहीं की—मंगोल-सेनायें पूरी तैयारी और योजनाके साथ अपना अभियान किया करती थीं। १२५३ ई० में ही मंगोल-सेनाओंने पूर्वी तिब्बत ले लिया, और उसी साल मुल्तान भी उनके हाथमें चला गया। इसी साल ईसाई मिशनरी खबरिक मुङ्ग-खेके दरबारमें कराकोरम पहुंचा। उसने अपने यात्रा-विवरणमें मंगोल-साम्राज्य, उसके राजपथों और राजधानीका बहुत अच्छा वर्णन किया है। उसके लिखनेसे मालूम होता है, कि राज-परिवारके लोग ईसाई, बौद्ध और मुसलमान सभीकी पूजाओंमें शामिल हुआ करते थे। मार्का पोलांकी महान् यात्रा मुङ्ग-खेके भाई कुबिलेके समय हुई, लेकिन खबरिकका यात्रा-विवरण भी काम महत्त्व नहीं रखता।

फरवरी १२५४ ई० में खुलाकूने अपनी विजय-यात्रा आरम्भ की। भारी सेनाके साथ वह ईरानकी ओर बढ़ा। सन्तारमें चारों तरफ मंगोलोंकी धाक जमी हुई थी। “एक बार खूनके कीचड़ और खोपड़ियोंके बड़े-बड़े मीतार खड़ा कर गांवों और नगरोंको ऐसा ध्वस्त कर दो, कि वहां कोई रोनेवाला न रहे, फिर कोई मंगोलोंके खिलाफ उठनेकी हिम्मत नहीं करेगा”—उनकी यह नीति सफल हो रही थी। १२५६ ई० में लालो, पूर्व-दक्षिणी तिब्बत और आवा (बर्मा) के राजाओंने अधीनता स्वीकार की। कोरियाका राजा अधीनता और सम्मान-प्रदर्शन करने के लिये स्वयं हगान (खाकान) के दरबारमें पहुंचा। अगले साल (१२५७ ई० में) तोङ्ग-किन् (अनाम) और था नदी तककी भूमिने मंगोलोंको अपना स्वामी स्वीकार किया। मुङ्ग-राज पूरी तौरसे खतम नहीं हो पाया था, लेकिन कुबिलेइके प्रहारोंसे अब वह कुछ ही दिनोंका मेहमान था। कुबिलेइकी इस सफलतापर मुङ्ग-खेको ईर्ष्या होने लगी। दरबारियोंने उसे भड़काया, कि कुबिलेइ स्वयं खाकान बनना चाहता है। कुबिलेइको जब यह खबर लगी, तो वह जल्दी-गल्दी अपने भाईके दरबारमें पहुंचा। उसके सौहार्द और अधीनता-प्रदर्शनसे मुङ्ग-खे बहुत प्रसन्न हुआ और कुबिलेइके साथ स्वयं सुङ्ग-राज्यपर आक्रमण करने चला। इसी साल हगानने अपने भाई खुलाकूको वक्षुके दक्षिणका सेनापति नियुक्त किया।

१८ फरवरी (१२५९ ई०) को मुङ्ग-खे चुङ्ग-कुये (सू-चाउ) में मर गया। इस समय तक सारा मंगोल-साम्राज्य एक था, और भिन्न-भिन्न खानोंने अपनी स्वतंत्रता घोषित नहीं की थी।

५. कुबिलेइ, हूबिलेइ, स-छेन्, शि-चू, (१२६०-९४ ई०)

हूबिलेइ कुबिलेइ खानके नामसे अधिक प्रसिद्ध है। भाईके मरनेके बाद इसने कूरिल्टाईके निर्वाचन-की प्रतीक्षा न कर तुरन्त अपनेको हगान घोषित किया, लेकिन कूरिल्टाईकी रसमको वह हटाना नहीं

भाविक है। लेकिन कन्फूसी साहित्य और शिक्षामें एकमात्र दास-मनोवृत्ति सिखलाना ही नहीं है, उसमें कितनेही और भी उच्च सांस्कृतिक तत्त्व हैं, जिनको छोड़ा नहीं जा सकता, लेकिन इसका नीर-शीर-विवेक करते उपयोग करना नवीन चीनमें ही सम्भव हो सकता है।

मंगोल खाकान गैर-मंगोल जातियोंके लिये स्वेच्छारी और कितनी ही बार अतिनिष्ठुर शासक थे, लेकिन उस निष्ठुरताका प्रयोग वह हर वक्त नहीं करते थे। यद्यपि मंगोलोंके साथ उनका खास पक्षपात था, लेकिन अधीनस्थ जातियोंको भी वह अधिकारोंसे स वंथा वंचित नहीं रखते थे। प्रायः सभी विजित देशोंमें उन्होंने पुराने राजाओं और सुल्तानोंको अपने अधीन शासक बनाकर रख छोड़ा, सिवाय उन देशोंके जहाँके लोगोंने उनका जबरैस्त प्रतिरोध किया था। कुविलेईने यद्यपि खानबालिग (पेकिङ्ग) को अपनी राजधानी बना उसे भव्य प्रासादोंवाली समृद्ध नगरीमें परिणत कर दिया था, लेकिन उसका भी अधिक समय तम्बुओंके भीतर बीतता था। मंगोल अपने घुमंतू जीवनको सैनिक जीवनका पर्याय समझते थे, इसीलिये चीन या दूसरे देशों पर शासन करनेवाले सभी मंगोल-खाकानोंकी राजधानियाँ चिड़िया-रैनबसेरा जैसी ही थीं। मंगोल-भाषामें राजधानी और प्रासादों को सराय कहते हैं। उसका अर्थ मुसाफिरोंकी सरायका हृगिज नहीं था। मार्को पोलोके अनुसार राजपथोंके हर मंजिलपर “सराय” (प्रासाद) थी, शायद उसीके कारण मुसाफिरोंकी टिकानको भी सराय कहा जाने लगा। राजकुमारों और बड़े-बड़े सैनिक अफसरोंको राज्यके भीतर अपने-अपने भूखण्ड मिले हुये थे, जिनपर वह अपनी मर्जीके मुताबिक शासन करते थे। यद्यपि छिङ्ग-गिस्ते मध्य-एशियाके मुसलमानोंके साथ बड़ी क्रूरताका बर्ताव किया था, बलख, मेर्व, तूस जैसे कितने ही समृद्ध नगरोंकी वस्तुतः उसने ईटसे ईट वजा दी थी, जिसके कारण वह फिर नहीं उठ सके; लेकिन, पीछे मंगोलोंका बर्ताव मुस्लिम जातियोंसे अधिक सहानुभूतिपूर्ण था, यह इसीसे पता लगता है, कि इन जातियोंको उन्होंने चारों वर्गोंमेंसे द्वितीय वर्गमें रखवा था। कुविले खानकी बर्मा और बंगालपर आक्रमण करनेवाली सेना का सेनापति नासिरुद्दीन भी इसका स्पष्ट उदाहरण है—मंगोल ऊँचे सैनिक पद को भी मुसलमानोंको देनेके लिये तैयार थे। इसका एक और भी कारण था—चाहे मध्य-एशियाके तुर्क मुसलमान हो गये हों, लेकिन जातिगतः वह मंगोलोंके भाई-बन्द थे। रूसियों और पश्चिमी जातियोंके खिलाफ अभियान करते समय मंगोलोंने किपचक तुर्कोंसे भाईचारा लगाकर उन्हें अपनी ओर कर लिया था, जिससे उन्हें एक लड़ाकू जाति सहायक मिल गई।

मंगोल-भाषाके प्रति मंगोल-शासकोंका अधिक पक्षपात स्वाभाविक था। उनके आज्ञापत्र उइगुर लिपिमें लिखी मंगोल-भाषामें हुआ करते थे। १३वीं शताब्दीके आरम्भमें चली हुई यह परिपाटी १५वीं शताब्दीके आरम्भ तक तेमूरलंग और उसके पुत्रोंके समय तक जारी रही। कट्टर मुसलमान होते भी यह लोग छिङ्ग-गिस्ते की वरासतको छोड़नेके लिये तैयार नहीं थे। लेकिन, मंगोल-भाषाका विकास जितना होना चाहिये था, उतना नहीं हो सका। “मंगोल-उन्निगुवा” (तोपचियाँ), “युवान-चाउ-बि-शी” जैसे कुछ इतिहास या दूसरे विषयोंके ग्रंथ उस समय मंगोल-भाषामें लिखे गये। पीछेके मंगोल-शासकोंके लिये ग्रंथ अधिकतर चीनी या पारसीमें लिखे गये, जो प्रायः इतिहाससे संबंध रखते थे। चीनमें मंगोल-भाषामें जो ग्रंथ लिखे गये, उनके अनुवाद चीनीमें भी हुये थे, पीछे मूल (मंगोल) ग्रंथ लुप्त हो गये और उनके चीनी अनुवाद भर बच रहे। कुविलेई खानने अपना ही नहीं अपने वंशका भी धर्म बौद्ध-धर्मको घोषित किया और अपने गुरु फग्पा लामाको तिब्बतका राज्य प्रदान किया, किन्तु उसने बौद्ध-ग्रंथोंके मंगोल-अनुवादका काम बहुत आगे नहीं बढ़ाया। १५ महाभारतोंके बराबर भारतीय ग्रंथोंके अनुवाद कन्जुर (बुद्ध-वचनानुवाद) और तन्जुर (शास्त्रानुवाद) के नामसे तिब्बती भाषामें मौजूद थे। उनमें (तिब्बती) कन्जुरको कुविलेई खानने स्वयं सोनेके अक्षरों में लिखवाया था, लेकिन उनका मंगोल-अनुवाद उस समय हुआ, जब चीनसे मंगोल-शासन खतम हो गया। मंगोल शायद संस्कृतकी तरह तिब्बती भाषामें ही धर्म-ग्रंथों का पढ़ना ज्यादा पुण्यदायक समझते थे। आज भी मंगोलियामें कन्जुर और तन्जुरके मंगोल-भाषामें हो जानेपर भी उन्हें तिब्बती भाषामें पढ़ना ज्यादा पुण्यकार्य समझा जाता है। शायद यह भी कारण रहा हो, लेकिन उस समय आजकी तरह मंगोलोंमें तिब्बती भाषाका प्रचार नहीं था, इसलिये अधिकांश लोग तिब्बती ग्रंथोंको बिना समझे ही पढ़ सकते थे।

यद्यपि कुबिलेइके समय ही फग्पा (फग्स्-पा=आर्य) लामाने मंगोल-बादशाहके लिये नये अक्षर बना दिये थे, लेकिन इस अक्षरमें अंकित पहलेपहल तांबेके सिक्के खु-लुगने १३१० ई० में ढलवाये। इसी साल मंगोल-राजकुमार तु-ला (कोकोचू-पुत्र) ने असफल विद्रोह किया। थुबु-थेमुरके समय तक अभी बाहरके मंगोल-राजवंशोंके साथ चीनके खाकानका घनिष्ठ संबंध था, उसे अधिपति माना जाता था; लेकिन अब वह संबंध शिथिल होने लगा। फर्वरी १३११ ई० में खु-लुग मर गया और उसकी जगह उसका भाई बोयन्-थू गद्दीपर बैठा।

८. बोयन्-थू, आयुरपरवल, आयुर्बलीभद्र, बूयन्-तू, जुन्-चुङ (१३११-२० ई०)

खु-लुगकी मृत्युके साल ही उसके भाईको गद्दी मिली। ईरानका मंगोल-वंश कुबिलेइके छोटे भाई खुलाकू-खानका था, इसलिये जिस वक्त जू-छी, चगताइ और ओगोताइ खानोंका चीनके हगानसे (खकान) से मतभेद या झगड़ा भी रहता, उस समय भी ईरानके मंगोल-वंशका हगानके साथ बहुत सौहार्द रहता। १३१२ ई० की फर्वरीमें बोयन्-थू ने अपना दूत ईरानी खान उल-जै-तूके पास भेजा। पुराने कालसे चीनमें हिजड़े बनाकर उन्हें अन्तःपुरमें ही बड़े-बड़े स्थान नहीं दिये जाते थे, बल्कि राज्यके ऊँचे-ऊँचे पदों पर भी वह पाये जाते थे। १३१४ ई० में बोयन्-थूने सरकारी नौकरियोंमें हिजड़ोंका प्रवेश निषिद्ध कर दिया, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं, कि हिजड़े अब बाट के भिखारी बन गये। उसके लिये तो अभी १९११ ई० तक प्रतीक्षा करनी थी। अगले ही साल (१३१४ ई०) एक प्रमुख हिजड़ेने एक सुंदर मन्दिर बनवाया। पिताकी गद्दी न पानेके कारण खुलुग-पुत्र कुसलने १३१६ ई० में चचाके विरुद्ध असफल विद्रोह किया। यह हम पहले देख चुके हैं, कि व्यापार और कृषि-उद्योगको धनका प्रधान स्रोत समझकर मंगोल-शासक उनकी उन्नतिकी ओर विशेष ध्यान देते थे। डेढ़ हजार वर्षोंसे अधिक समयसे रेशमकी जन्मभूमि चीन अपने सुंदर रेशमी कपड़ोंके लिये सारी दुनियामें प्रसिद्ध था। रेशम देशकी आमदनीका एक बड़ा भाग था। बोयन्-थूके शासन-कालमें १३१८ ई० में सरकारने तूतके वृक्ष लगाने तथा रेशमके कीड़े पालनेकी विधिके ऊपर एक पुस्तिका प्रकाशित की। शायद सरकारोंकी ओरसे इस तरहकी छपनेवाली पुस्तकोंमें यह सबसे पहिली थी।

फर्वरी १३२० ई० में बोयन्-थू मर गया और उसकी जगहपर उसका पुत्र गेगेन् गद्दी पर बैठा।

९. गेगेन्, शु-तु-फल (शुद्धफल), यिङ-चुङ (१३२०-२३ ई०)

मंगोल खान-वंशमें धर्मपाल, आयुर्बलीभद्र या शुद्धफल जैसे शुद्ध भारतीय नामोंका होना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, क्योंकि अब मंगोल-राजवंश ही नहीं साधारण जनतामें भी बौद्ध-धर्म जातीय धर्म समझा जाने लगा था। गेगेन् (ग्य-गेन्) १८ वर्षका था, जब कि वह गद्दीपर बैठा और २१ सालकी आयुमें मर गया। उसके बाद छठे खान थुबु-थेमुरके भाई कमलका पुत्र यिसु-थेमुर गद्दीपर बैठा।

१०. यिसु-थेमुर, यिस्सुन-तइमुर, ताइ-चिङ-ति (१३२३-२८ ई०)

अब खानोंके शासनमें कोई विशेष बात नहीं थी। १३२३ ई० में “ताइ-युवान-तोङ-शी” (महा-मंगोल-विधान) प्रकाशित हुआ। अगस्त १३२८ ई० में खान मर गया और उसकी जगह उसका भतीजा रिन्छेन् गद्दी पर बैठा।

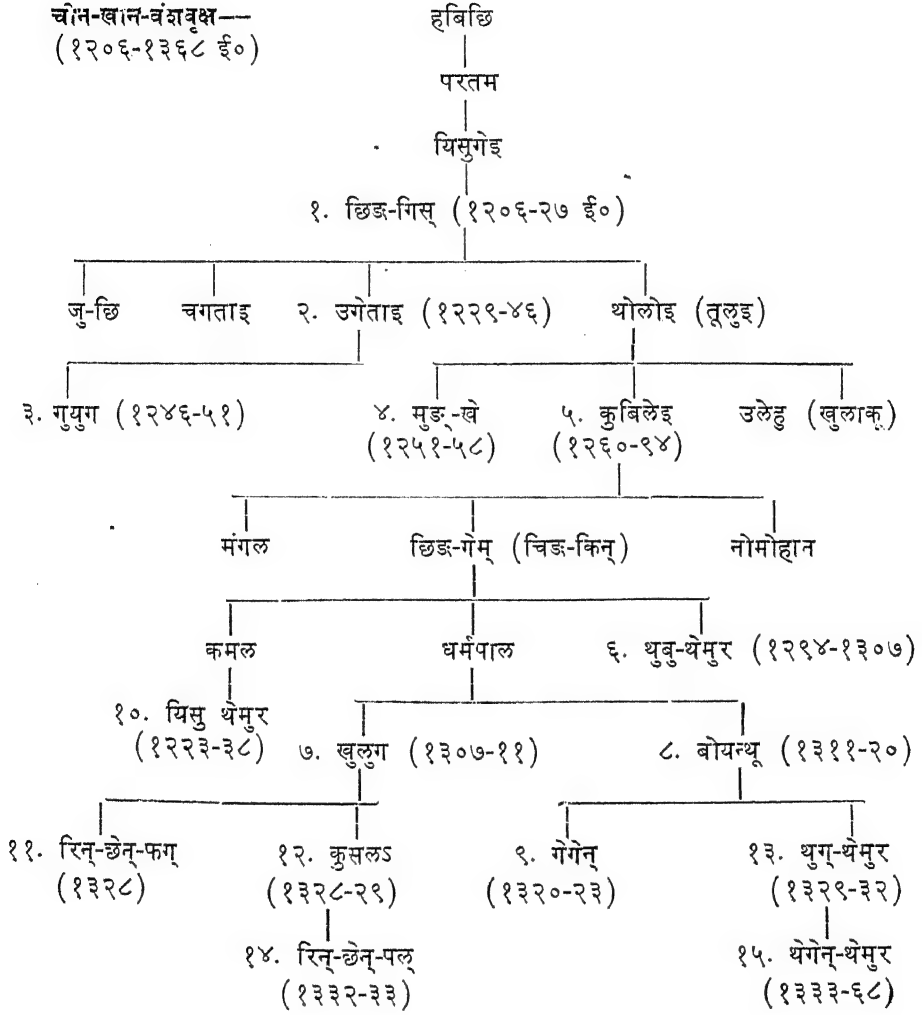
११. रिन्छेन्-फग्, यू-चू (१३२८ ई०)

बहुत कम समय शासन करनेके कारण कितनी ही वंशावलिओंमें इसका नाम नहीं मिलता। रिन्छेन्-फग् तिब्बती शब्द है, जिसका अर्थ है रत्न-आर्य। उसके बाद उसका भाई तथा खु-लुगका पुत्र कुसल गद्दीपर बैठा।

१२. कुसलऽ, कोसल, मिङ-तिङ (१३२८-२९ ई०)

अब वंशकी निर्बलताके सूचक चंद दिनोके खान होते रहे।

चीनके मंगोल खाकानोंके समय पहले घनिष्ठतापूर्वक किंतु पीछे शिथिलताके साथ चगताइ, जू-छि, हुलाकू आदिके राजवंशोंका संबंध रहा, इसका वर्णन आगे हम करेंगे । तू-लुइ-वंश के वर्णन के बाद अब हम जू-छि-वंशको लेते हैं जिसके शासनमें उत्तरी मध्य-एशिया और रूस बहुत समय तक रहे ।



अध्याय २ सुवर्ण-ओर्दू

(१२२४-१४०० ई०)

छिङ्-गिस्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छिके ओर्दूको "सुवर्ण-ओर्दू" के नामसे पुकारा जाता है, यद्यपि मुगलमान इतिहासकार इसे अधिकतर कोक-ओर्दू (नील-ओर्दू) के नामसे याद करते हैं, और जू-छिके ज्येष्ठ पुत्र ओर्दूके उलुसको अक-ओर्दू (श्वेत-ओर्दू) कहते हैं। रूसी प्रजा इन्हें जोल्तोय (सुवर्ण-ओर्दू) के नामसे जानती है।

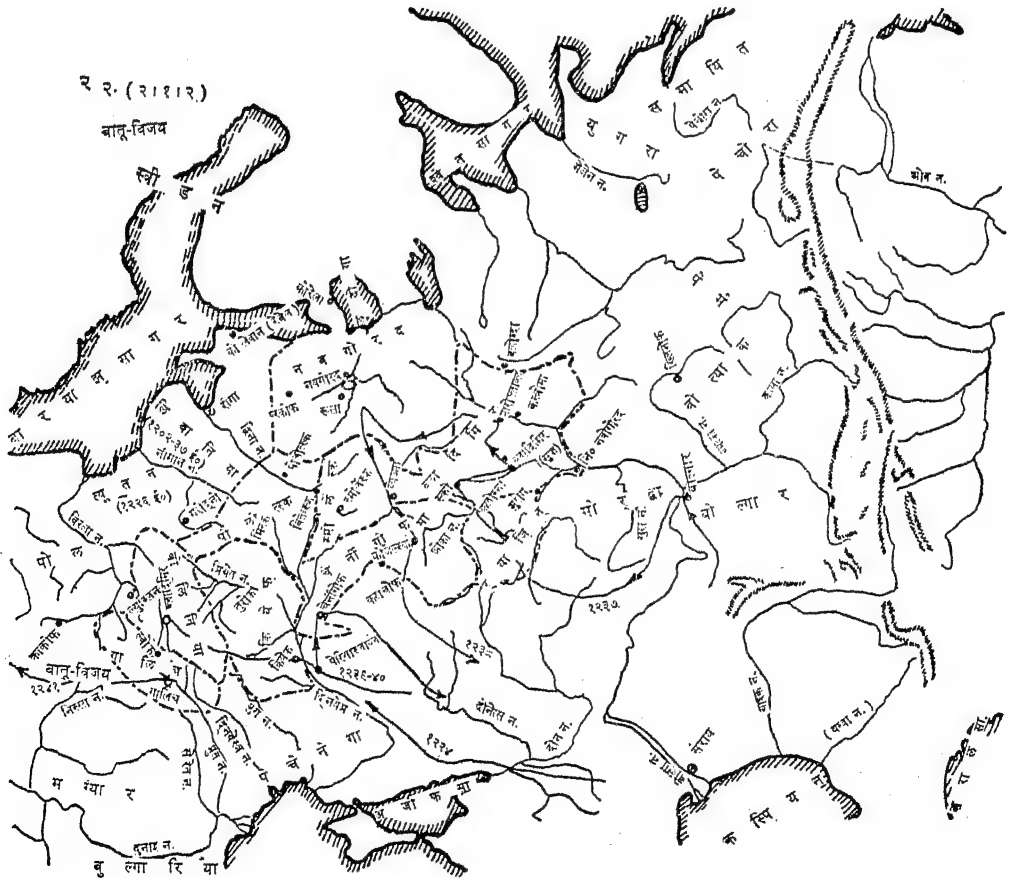
१. जू-छि, तू-शि (म० १२२४ ई०)

छिङ्-गिस्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छि या तू-शिकी मृत्यु बापसे छ महीने पहले हुई थी, यह हम कह आये हैं। जू-छिके बारेमें एक मुसलमान गुमनाम लेखककी कृति "शख्तुल्-अतराक" (तुर्कवंश-वृक्ष) में कितनी ही बातें कही गई हैं। मंगोलियासे दूर चले गये मंगोल तुर्क-समुद्रमें चंद बूंदोंकी तरह थे, और वह उनके भीतर हजम भी हो गये। इसीलिये इस लेखकने मंगोल-वंशवृक्षको तुर्क-वंशवृक्ष कहा। इस तथा दूसरे ग्रंथोंके अनुसार भी छिङ्-गिस्को अनुपस्थित देखकर उसके प्रतिद्वंद्वी मरकितोंने छिङ्-गिस्की उलुसका मार भगाया और वह उसकी ज्येष्ठ पत्नी बुर्ते-फूजिन्को और बहुतसे आदमियोंके साथ पकड़ ले गये। बुर्ते-फूजिन् कंकुरत कबीलेके सरदार दाई-नोयन्की पुत्री थी। यही छिङ्-गिस्के चार प्रधान पुत्रों और पांच पुत्रियोंकी मां थी। बुर्ते-फूजिन्के पकड़े जानेके समय जू-छि मांके पेटमें ६ मासके गर्भके रूपमें था। केरदन खान ओङ्-खान छिङ्-गिस्का बड़ा समर्थक था। वह छिङ्-गिस्को अपना पुत्र मानता था। जब छग घटनाका पता लगा, तो उसने मरकितोंपर आक्रमण कर बुर्ते-फूजिन् तथा उसके आदमियोंको लूटा लिया, और अपनी धर्म-बधूको फिर छिङ्-गिस्के पास भेज दिया। इसी समय रास्ते में जू-छि पैदा हुआ। पंथमें पैदा होनेके कारण ही उसका नाम जू-छि (पंथक) पड़ा। पीछे चगताइ खानोंका जू-छि-वंशके कोक-ओर्दू और अक-ओर्दूसे सदा झगड़ा होता रहा। इसीलिये चगताइ विद्वानोंके इतिहास-ग्रंथोंमें जू-छिको कलंकित करते हुये यह साबित करनेकी कोशिश की गई, कि जू-छि छिङ्-गिस्का पुत्र ही नहीं था। समर्थक इस बातके साबित करनेका प्रयत्न करते हैं, कि जू-छिकी मां केवल चार महीने छिङ्-गिस्के दूर रही, जब कि रास्तेमें जू-छि पैदा हुआ। "तुर्कवंश-वृक्ष" का लेखक यह भी कहता है—"चाहे पुत्र कितना ही अच्छा हो, असली और नकलीके प्रति पिताके प्रेममें जमीन-आसमानका अन्तर होता है। साइन् (छिङ्-गिस्) जू-छि खानके ऊपर हृदसे ज्यादा प्रेम और स्नेह रखता था।" जू-छि खानके मृत्युकी खबर जब उलुसमें पहुंची, तो उसे बापतक पहुंचानेकी किसीकी हिम्मत न हुई। यह काम दरबारी कवि उलुग-दुर्जीके सिरपर रखा गया। कविने हिम्मत करके पद्यमें उपमाके रूपमें यह खबर सुनाई, जिसे सुनकर छिङ्-गिस् बहुत दुःखी हुआ। कवि और छिङ्-गिस्के दुःखोंको तुर्की भाषाके पद्यमें प्रकट किया गया है, यद्यपि यह निश्चय है, कि छिङ्-गिस् तुर्की नहीं बोलता था, इसलिये यह पद्य पीछे बनाये गये हैं। तो भी इसमें संदेह नहीं, कि छिङ्-गिस्को अपने ज्येष्ठ पुत्रकी तरकसीके बाद भी उसके साथ असाधारण प्रेम था, इसीलिये उसे बहुत दुःख हुआ।

ख्वारेज्म-विजयके समय छिङ्-गिस्ने जू-छिको पूर्वमें कयालिकसे पश्चिममें सकसीनतकी दस्ते-किपचक (वर्तमान कजाकस्तान), बोलगारों, आलानों, वश्किरों, उरुसों और चेरकासोंके देशोंके साथ वह भूमि भी प्रदान की, जहां कि तातारों (मंगोलों) के घोड़ोंकी टापें पड़ें। जू-छिका ओर्दू यद्यपि ज्येष्ठ पुत्र ओर्दू और द्वितीय पुत्र बा-तूके अधीन पहले हीसे दो उलुसोंमें बंट गया था, लेकिन श्वेत-ओर्दूके संस्थापक ओर्दाने जिस तरह अपने छोटे भाई बा-तूको अपना अधिपति स्वीकार किया, वैसे ही उसका श्वेत-ओर्दू भी अपनेको बा-तूके सुवर्ण-ओर्दूके अधीन मानता रहा। जू-छि ओर्दूका पूर्वी

भाग (किपचक-भूमि) श्वेत-ओर्दूकी माना जाता था । सुवर्ण-ओर्दूके ३९ शासक हुये—

१. जू-छि, तू-शि छिङ्ग-गिस्-पुत्र	१२२४	ई०
२. बा-तू जू-छि-पुत्र	१२२४-५५	"
३. सेर-तक बा-तू-पुत्र	१२५५	"
४. उलकची बा-तू-पुत्र	१२५५	"
५. बेरेके, बरका, जू-छि-पुत्र	१२५५-६५	"
६. मुङ्ग-खे थे-मुर, मंगू-थेमुर तोगोन-पुत्र	१२६५-८०	"
७. तू-दा-मंगू तोगोन-पुत्र	१२८०-८९	"
८. तोगू-ताइ, तोक्-तोगू, मंगू-थेमुर-पुत्र	१२८९-१३१३	"
९. उज्वेक तोक्-तोगूका भतीजा	१३१३-४२	"
१०. तिनी (दिनी) बेग उज्वेक-पुत्र	१३४२	"
११. जानी-बेग उज्वेक-पुत्र	१३४२-५७	"
१२. बेदी-बेग जानी-पुत्र	१३५७-५९	"
१३. कुलदी (कुल्या) बेग, जानी-पुत्र	१३५९	"
१४. नौरोज (नूरुस) बेग जानी-पुत्र	१३५९-६०	"
१५. चेरकेस-बेग जानी-पुत्र	१३६०	"
१६. ओरदा शेख		
१७. खिजिर		
१८. कुलफा		
१९. तेमूर खोजा		
२०. मुरीद		
२१. अजीज, बाजारची		
२२. हाजी एरजन-पुत्र		



१२. बरदीबेग जानी-पुत्र (१३५७-५९ ई०)

बरदीने अपने बापको ही मरवाकर संतोष नहीं किया, बल्कि जिस बिस्तरेपर वह मारा गया था, उसीपर उसने बापके घातक फरशिको बैठा आज्ञा माननेसे इन्कारियोंको मरवाने का इरादा किया। तुगलुबाईने उसकी बातको पसन्द किया और आज्ञा स्वीकार करानेके वहाने वह सारे ही बारह शाह-जादोंको वहां जमा करवा मरवाने लगा। बरदीका आठ महीनेका एक सहोदर भाई था। तायदोलू खातूनने उसे गोदमें लिये आकर बहुत मिन्नत की, कि इस मासूम बच्चेको क्षमा कर दे। बेरदीबेगने उसे हाथसे छीन जमीनपर पटककर वहीं मार दिया। उसने तीन साल तक दृढ़तापूर्वक शासन किया।

जहांतक रूसी राजुलोंका सम्बन्ध है, महाराजुल इवान (मास्को), राजुल वासिली (त्वेर), उसके भतीजे व्सेवोलोद (खोलम) के पदोंके लिये बरदीबेगने अपनी स्वीकृति दी।

१३५९ ई० में मास्कोका महाराजुल इवान मर गया, इसी साल किलदीबेग (कुलफा) ने बरदीबेगको कत्ल कर दिया।

१३. किलदीबेग, कुलफा (१३५९ ई०....)

किलदीबेगने बरदीबेगके कत्लके साथ उसके शुरू किये वंशोच्छेदके कामको पूरा कर दिया। अब कोक (सुवर्ण)-ओर्दू राजवंशका एक भी नामलेवा नहीं रह गया। सारे ओर्दू में गड़बड़ी मच गई। अमीरोंने अधिकारको अपने हाथमें रखनेके लिये बेरदीबेगके हत्यारेको जानीबेगका पुत्र कहकर गद्दीपर बैठाया। हर अमीर अपनी शक्तको बढ़ानेके लिये पीठ पीछे षड्यंत्र रच रहा था। इसी षड्यंत्रमें अमीर यर्गाल-बुगा, अमीर अहमद और अमीर नाङ्ग-गू-दाई निर्वासित हुये। इसी समय सरकारके एक बड़े अधिकारी नगलसबाई (?) ने किलदीबेगको मार एक दूसरे आदमीको गद्दीपर बैठाया, जो कि तीन रोज बाद मारा गया।

१४. नौरोजबेग, १५. चेरकेसबेग (१३७४ ई०)

ये दोनों भी इसी तरह कुछ दिनोंके लिये सिंहासनपर बैठे। फिर कोक (सुवर्ण) ओर्दूके अमीरोंने श्वेतओर्दूके खान चिमताईके पास जा गद्दी संभालनेके लिये बहुत निमंत्रण और आवेदन किया, लेकिन उसने उसे न स्वीकार कर अपने भाई ओर्दाशेखको भेजा।

१६. ओर्दाशेख

श्वेत-ओर्दूका यह राजकुमार बातूके सिंहासनपर बहुत दिनोंतक नहीं टिक सका। किसीने “कैसे ओर्क-ओर्दूके सिंहासनपर अक-ओर्दूका आदमी बैठेगा” कह एक रात तलवारसे ओर्दाशेखका काम तमाम कर दिया। इसपर अमीरोंने कुछ बेगुनाह आदमियोंके ऊपर अपराध लगाकर मरवाया।

१७. खिजिर ससीबूगा-पुत्र

अब ओर्दाशेखके भाई खिजिर ओगलानको गद्दीपर बैठाया गया, जो भी नौ महीना राज्य करनेके बाद खतम हुआ।

आगे इतिहासकार अनुनीम अस्कन्दरने निम्न खानोंका होना बतलाया है—

१८. कुलफा, ससीबूगा-पुत्र

खिजिरके एक साल भी बादशाही न करके मर जानेके बाद उसके भाई कुलफाको गद्दीपर बैठाकर नौ महीने बाद उसे भी कत्ल कर दिया गया।

१९. तेमूरखोजा, ओर्दाशेख-पुत्र

फिर तेमूरखोजा अमीरोंका खिलौना बना। वह बड़ा ही व्यभिचारी निकला। लोग दो साल तक उसे बर्दाश्त करते रहे। एक रात किसी स्त्री के साथ बलात्कार करनेके लिये घरमें घुसा देख, पतिने अनजाने ही उसे तलवारके घाट उतार दिया।

२०. मुरीद ओर्दाशेख-पुत्र

इसने तीन सालतक राज्य किया, लेकिन अब इन खानोंमें बदचलनी विशेषकर अप्राकृतिक व्यभिचारका मर्ज बहुत फैल गया था। अपने अमीरुल्-उमरा (अमीरोंके अमीर) मोगलबक-पुत्र इलियासके सुंदर लड़केपर मुग्ध हो मुरीदने चाहा, कि बापको मारकर उसका स्थान बेटेको दे दे। यह भेद मुरीद-खानकी खातूनको मालूम हो गया। उसने इर्ष्या या बेवकूफीसे यह खबर इलियासके पास भेज दी। उसने अवसर न दे खानको ही मार डाला।

२१. अजीज तेमूरखोजा-पुत्र

इसकी आदत भी अपने पूर्वगमियों जैसी थी और इसने प्रसिद्ध संत सैयद अताके वंशवाले एक लड़केको भ्रष्ट किया। भेद खुलनेपर पश्चात्ताप करके उस लड़केसे इसने अपनी लड़की ब्याह दी; लेकिन तीन साल बाद फिर वही चाल चलने लगा, जिसके कारण उसे अपने प्राणोंसे हाथ धोना पड़ा।

२२. हाजी खां एर्जन-पुत्र

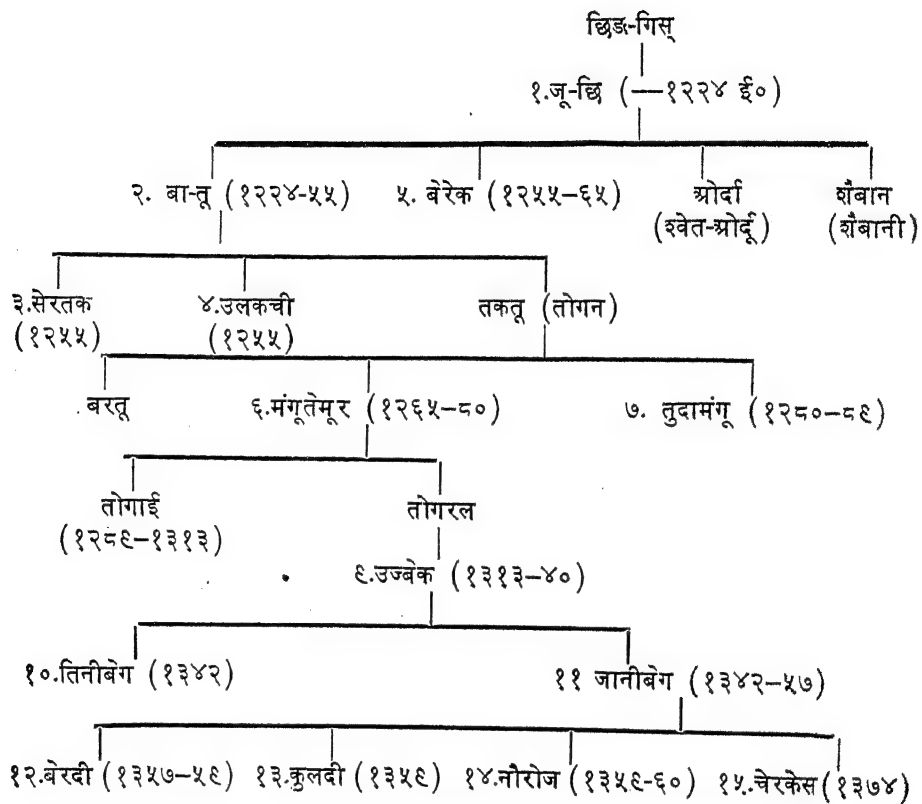
श्वेत-ओर्दूके खान एर्जन (१३१६-४४ ई०) के पुत्रको अब बलिका बकरा बनानेके लिये लाया गया। वह कुछ दिनों तक अच्छा रहा, फिर खानदानी बदचलनी का भूत इसके सिरपर भी सवार हुआ। एक बार तोबा की, लेकिन फिर वही रफ्तारे-बेढंगी। अन्तमें वह आधी रातको अपने सोनेके वस्त्रोंमें ही मार डाला गया।

अनुनीम अस्कन्दरके अनुसार हिजरी सन् ७५१* से ७६५ के बारह सालोंमें आठ बादशाह हुये। इसके बाद श्वेत-ओर्दूके खान उरुसखानने श्वेत-ओर्दू और कोक-ओर्दूको इकट्ठा करके शासन करना शुरू किया, जिसका परिणाम तोकतामिशके रूपमें एक बार जू-छिके वंशका चरम उत्कर्ष तथा तेमूर-लंगके प्रहारके कारण उसका सत्यानाश हुआ।

सुवर्ण (कोक)-ओर्दूके रूपमें मंगोल-शक्ति आधे युरोपतक छा गई। रूसके तो सभी शासक उसके अधीन दाससे थे। यद्यपि मंगोलोंने अपने इन अधीन लोगोंपर बहुत अत्याचार किये, लेकिन तत्रेज और दूसरी जगहोंके निर्मम हत्याकांडोंके सामने वह कुछ नहीं थे। मंगोलोंके शासनके साथ ही वाणिज्य और शिल्पकी बड़ी वृद्धि हुई थी, जिसके कारण जहां मंगोल शासकोंको बहुत लाभ हुआ, वहां मास्कोको आगे बढ़नेका मौका मिला और धीरे-धीरे पुरानी बुल्गार नगरीका स्थान मास्कोने ले लिया। व्यापार द्वारा प्राप्त प्रचुर धन-राशिके बलपर मास्कोके महाराजुलोंने सुवर्ण-ओर्दूके खानोंको अपने वशमें कर अपनी शक्ति बढ़ाई, रूसका एकीकरण करना शुरू किया और अन्तमें रूसकी शक्तिके उत्कर्ष तथा जू-छिके-वंशके आंतरिक कलहके कारण सुवर्ण-ओर्दूका अस्तित्व खतम हो गया। इसी कालमें मास्कोके महाराजुलोंने खानकी ओरसे कर उगाहनेका अधिकार पा अपनी ओरसे इस कामपर अपने अधीनस्थ बायरोंको लगाया—रूसी प्रजा अब बायर, महाराजुल और खान तीनोंके उत्पीड़न तथा शोषणके नीचे दबकर कराहने लगी। उसका स्वतंत्रता-प्रेम और जनतांत्रिकताकी भावना लुप्त हो चली, और अत्याचारके मारे कितने ही रूसी भाग-भागकर दूसरी जगहोंमें जाकर बसने लगे।

* ७५१ हि० (११ मार्च १३५०-२७ फरवरी १३५१ ई०), ७६५ हि० (१० अक्टूबर-२७ सितंबर १३६३ ई०)

सुवर्ण-ओर्दू-खान-वंशवृक्ष
(१२२४-१३७४ ई०)



अध्याय ३

श्वेत-ओर्दू

(१२२४-१४२५ ई०)

१. जू-छि (तू-शी) खान

छिङ्ग-गिस्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छि के बारेमें हम पहले बतला चुके हैं। उसके मरने के बाद उसका सिंहासन ज्येष्ठ पुत्र ओरदाको न मिलकर बा-तूको मिला। ओरदाको बाप के राज्य का पूर्वी भाग मिला, लेकिन उसने अपने वंशको बा-तू के सिंहासन के अधीन माना। ओरदा का उलुस श्वेत-ओर्दू (अक-ओर्दू) नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिसके खान निम्न प्रकार थे :—

	काल
१. जू-छि, छिङ्ग-गिस्-पुत्र	—१२२४ ई०
२. ओरदा जू-छि-पुत्र	१२२४ ”
३. कोनिचि ओरदा-पौत्र, सर्तकई-पुत्र	—१३०१ ”
४. बायन कोनिचि-पुत्र	१३०१ ”
५. ससीबूगा बायन-पुत्र	१३६६ ”
६. एर्जन ससीबूगा-पुत्र	१३६६-४४ ”
७. मुबारक खोजा एर्जन-पुत्र	१३४४ ”
८. चिमतई एर्जन-पुत्र	१३४४-१३६१ ”
९. उरुस चिमतई-पुत्र	१३६१-७० ”
१०. तोकताकिया उरुस-पुत्र	१३७० ”
११. तेमूरबेग उरुस-पुत्र	१३७०-७५ ”
१२. तोकतामिश तुलि-पुत्र	१३७५-८७ ”
१३. नूजी ओगलान	१३८५ ”
१४. तेमूरकुतुलुक, तेमूरबेग-पुत्र	१३८५-१४०० ”
१५. शादीबेग, तेमूरबेग-पुत्र	१४००-८ ”
१६. पूलाद तेमूरबेग-पुत्र	१४०८-१० ”
१७. तेमूर कुतुलुक-पुत्र	—१४११ ”
१८. जलालुद्दीन तोकतामिश-पुत्र	१४११-१२ ”
१९. करीमबरदी तोकतामिश-पुत्र	१४१२-
२०. कपक, किवेक
२१. चिङ्ग-गिज	१४१७ ”
२२. जब्बारबरदी तोकतामिश-पुत्र	”
२३. मुहम्मद	१४२२-३८ ”
२४. बोराक, बुराक, बुराकि	१४२५-२८ ”
२५. सैयत अहमद
२६. दरबीस
२७. किवेक	—१४२२
२८. उलुग मोहम्मद	१४३७

बोरकको वहाँसे हटना पड़ा। शाहख़ इस अभियानसे ६ अक्टूबर १४२७ ई०को खुरासान लौटा। दक्षिणमें इस तरह सफल हो बोरक अपने पूर्वी पड़ोसी चंगताईवंशकी उत्तरी शाखाके राज्य मुगोलिस्तान-पर जा पड़ा। ८३२ हि० (११ अक्टूबर १४२८—२६ सितंबर १४२९ ई०) में उलुगबेकने अपने बाप शाहख़के पास हिरात खबर भेजी, कि बोरक और मुगोलिस्तानके सुल्तान महमूदमें भारी युद्ध हुआ, जिसमें सुल्तान महमूदने बोरकको कतल कर दिया।

२८. मुहम्मद सुल्तान, तेमूरखान-पुत्र, तुगलक-तेमूर-पौत्र (१४२५-३८ ई०)

बोरकके बाद मुहम्मद सुल्तान गद्दीपर बैठा। ख्वारेज्मका तेमूरियोंके हाथमें जाना किपचकोंको बहुत खटकता था, आखिर जू-छिके राज्यका आरंभ ख्वारेज्मको लेकर हुआ था। मुहम्मदने ८३४ हि० (१६ सितंबर १४३०—८ सितंबर १४३१ ई०) के अंतमें अपनी सेना ख्वारेज्मपर भेजकर वहाँ बहुत लूट-पाट मचाई, लेकिन वह उसे ले नहीं सका। मुहम्मद सुल्तानने अपनी राजधानी किममें बनाई थी।

२९. दौलत बर्दी

बोरक जिस वक़्त अपने पूरबके पड़ोसियोंसे लड़ने गया था, उसी समय मुहम्मद पश्चिमी किपचकका खान बन बैठा, लेकिन जल्दी ही दौलत बरदी तोकतामिश-पुत्रने उसे हटा दिया। वह तीन दिन ही शासन करने पाया था, कि बोरक खान फिर आ गया।

३०. कादिर बर्दी

शायद यह तोकतामिशका पुत्र था, जिसे इदिकूने मारा। इदिकू भी लड़ाईमें या सिर-दरियामें डूबकर मरा।

३१. शादीबेक

गयासुद्दीन शादीबेकने भी थोड़े ही समय शासन किया। मुहम्मद सुल्तान तेमूर-खान-पुत्रके समयसे ही किपचककी राजनीतिक अवस्था इतनी अस्त-व्यस्त रही, कि राजावलीका ठीकसे पता नहीं लगता।

३२. सैयद खान, सैदक खान

इसने कुछ दिनोंतक शासन किया, फिर जानीबेकका पोता और सैयद खानका पुत्र कासिम खान गद्दीपर बैठा।

३३. कासिम खान, सैदक खान-पुत्र (१५०९-१५२३ ई०)

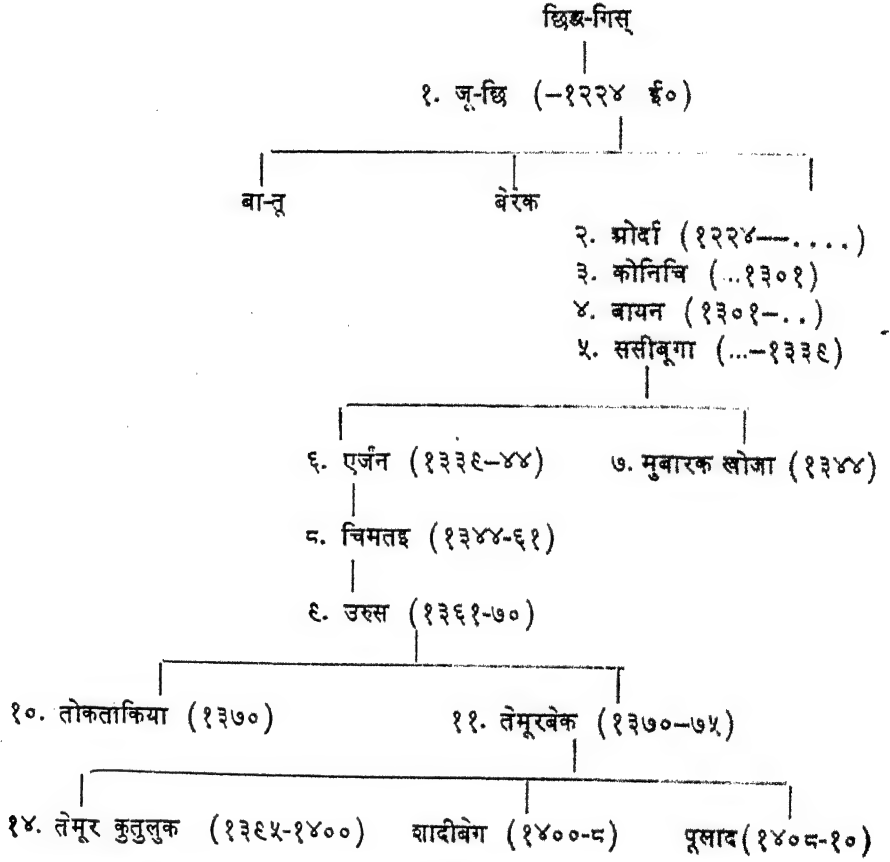
दशते-किपचकका खान होते ही कासिम खानको सैबक खानसे मुकाबिला करना पड़ा। ६१५ हि० (२१ अप्रैल १५०६—६ अप्रैल १५१० ई०) में सैबक खानने चढ़ाई करके कासिमको हराया। ६३० हि० (१० नवंबर १५२३—२८ अक्टूबर १५२४ ई०) में कासिम खान मरा।

३४. अकनजर, हकनजर खान, कासिम-पुत्र (१५२३)

बापके बात अकनजरको गद्दी मिली। अब श्वेत-ओर्दूके दो टुकड़े हो गये थे, जिनमें एकका शासक अकनजर था, और दूसरेके जू-छि-पुत्र शैबानके वंशज।

श्वेत-ओर्दू-खान-वंशवृक्ष

(....—१२२४—१४१०....ई०)



रूस (रूरिक-वंश)

(९११-१५९४ ई०)

अवतरणिका

मध्य-एसियाके इतिहासको स्पष्ट करनेके लिये चीन और ईरानके तत्कालीन इतिहासके साथ रूसके इतिहासका भी कुछ परिचय आवश्यक है, क्योंकि शताब्दियोंतक वह एक दूसरेको प्रभावित करते रहे हैं। ईरान जहां अपनी भाषा और संस्कृतिसे मध्य-एसियाके साथ समीपता स्थापित करता है, वहां चीन काफी समयतक उसके ऊपर सीधे राजनीतिक प्रभाव रखता रहा। रूसका प्रभाव यद्यपि आरंभमें अधीन-जातिके सिवा और रूपमें नहीं देखा जाता, किन्तु आगे वह बढ़ते-बढ़ते सबसे अधिक प्रभावशाली हो जाता है। हालकी दो शताब्दियोंमें तो मध्य-एसियामें बहुतसे परिवर्तन लाते रूस आज एक नये संसारका निर्माण कर रहा है। ऐसी स्थितिमें रूसी इतिहासपर सिंहावलोकन किये बिना हम मध्य-एसिया की कितनी ही बातोंको समझ नहीं पायेंगे।

(क) शक-सरमात

शकोंके विशाल देश (शकद्वीप)के बारेमें हम पहले कह आये हैं और यह भी बतला आये हैं, कि शक और सिथ एक ही थे। इन्हींकी कालासागर और कास्पियन समुद्रके उत्तरमें रहनेवाली शाखा सरमात कही जाती थी। आगे यह नाम भूलसा जाता है, और ईसाकी प्रथम शताब्दीमें वेनिद (वेन्द) और अंत दो नये लोग हमारे सामने आते हैं, जो शक-सरमात-वंशके ही हैं।

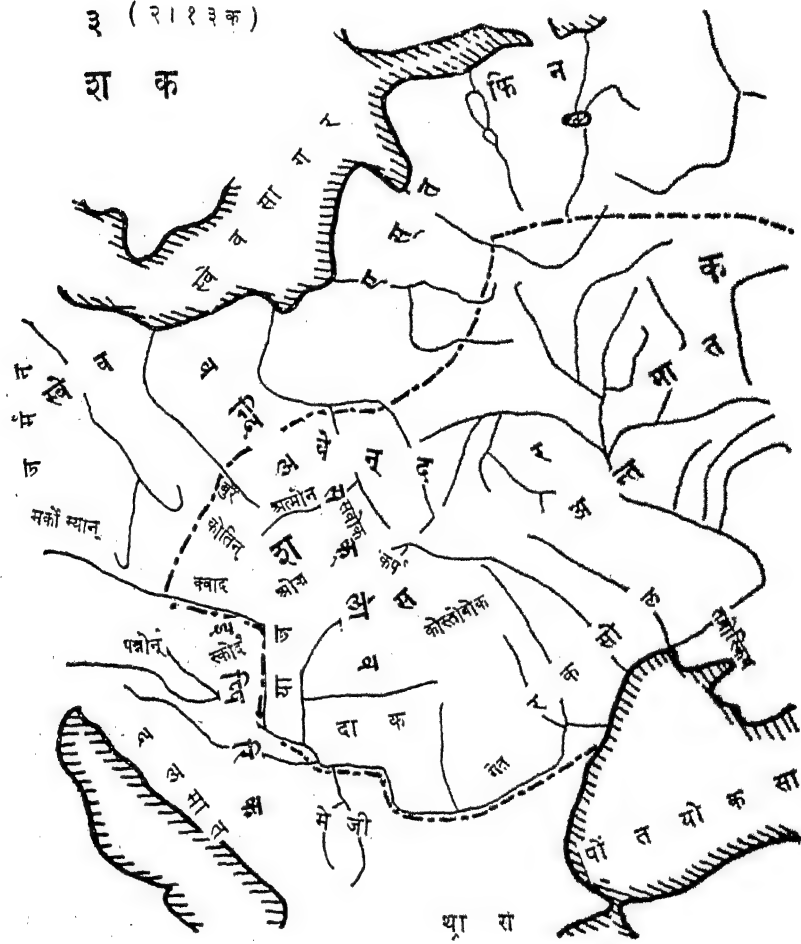
वेन्द—वेन्दका शब्दार्थ है जलनिवासी या नदीनिवासी। यह विस्तुला नदीसे दनियेपर और दनियेस्तर नदियोंके ऊपरी भागोंमें रहते थे, यही पश्चिमी स्लावों (पोल, चेक, स्लावक) के पूर्वज थे।

अन्त—अन्तका शब्दार्थ है सीमांतवासी। ईसाकी प्रथम शताब्दीमें यह दनियेस्तरसे दोनतककी भूमिमें रहते थे।

पूर्वी और पश्चिमी स्लावोंके अलावा शक-सरमातोंकी एक दक्षिणी शाखा भी थी, जिससे दक्षिणी स्लाव (युगोस्लाव) खोरबात, सर्ब (मकदूनी) और वोल्गारी स्लाव जातियां निकलीं। रूसी विद्वान् अ० अ० शाहमातोफके अनुसार सारी रूसी जातियां—रूसी, उक्रइनी और बेलोरूसी—अंतोंकी संतान हैं, लेकिन अकदमिक म० स० शुसेव्स्की अंतोंको केवल उक्रइनोंका पूर्वज मानते हैं।

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि ई० पू० द्वितीय शताब्दीमें चीनसे पश्चिमी देशोंका जो व्यापारमार्ग खुला था, वह भारत और ईरानतक ही सीमित नहीं था, बल्कि ई० पू० द्वितीय शताब्दीमें ही दक्षिणी रूस भी इस व्यापारिक क्षेत्रके भीतर था—स्वारेज्मसे रूसका बहुत घनिष्ठ व्यापारिक संबंध था। उस समय वोल्गा नदीका नाम फिन भाषामें था, जिसे तुर्कोंने इतिल बनाया और फिर तटपर बुल्गारोंके रहनेके कारण वोल्गा नाम पड़ा। हूणोंकी बाढ़के आनेसे पहले ईसाकी प्रथम शताब्दीमें उरालके पास तुर्क जातियां रहती थीं—चुवाश, याकूत (साइबेरिया) और आधुनिक तुर्क एक ही जातिके हैं।

रूसियोंका संबंध अंतोसे है। यह अंत ईसाकी चौथी सदीमें दनियेस्तरसे दोनके आगेतक फैले हुये थे। इनके पश्चिमी पड़ोसी गाथ क्रिमियामें तथा दनियेस्तरके पश्चिममें रहते थे। अंतोंका सबसे पुराना उल्लेख हमें केचमें प्राप्त एक अभिलेखमें मिलता है। चौथी सदीमें हूणोंकी बाढ़ आकर अंतोंको उत्तरकी और ढकेलती गाथोंके ऊपर आ पड़ी। ३७६ ई० में हूण-राजा बलम्बरने गाथ-राजा बीनीतरको लड़ाईमें मार उसकी खोपड़ीका प्याला बनाया। हूणोंद्वारा भगाये गये गाथ अपने पड़ोसी अंतोंके ऊपर पड़े। इस संघर्षमें अंत-राजा बोग अपने पुत्रों और सत्तर सामंतोंके साथ मारा गया।



हूणोंने कुछ समयतक दन्यूब और तिसिया नदीके बीचमें अपना राज्य कायम किया। पांचवीं सदीके पूर्वार्धमें इनके राजा अत्तिला (मृत्यु ४५३ ई०) के प्रतापसे सारा पूर्वी युरोप कांपता था।

हूणोंके बाद पांचवीं सदीमें आवारोंकी बाढ़ पूरबसे पश्चिमकी ओर चली। तुर्कोंके प्रहारके मारे उनके पहलेके स्वामी अब जान बचानेके लिये पश्चिमकी ओर भागे। इसीपर तुर्कोंके राजा सिलजीबुलने कहा था—“वह (आवार) चिड़िया नहीं है, जो कि हवामें उड़ जायेंगे। तुर्कोंकी तलवारोंसे भागकर, मछली नहीं है, कि गहरे पानीमें चले जायेंगे।.....जायेंगे पृथ्वीपर ही। जब मैं हेफतालोंसे लड़ाई खतम कर लूंगा, तब आवारों पर पड़ूंगा, तब वह मेरे हाथसे नहीं निकल सकेंगे।” आवारोंने दक्षिणी रूसमें पहुँचकर कान्स्तान्तिनोपोलमें रोमके सम्राट्के पास अपना दूत भेजकर शरण मांगी। ५६२ ई० के आसपास सम्राट् योस्तीनियनने उन्हें बसनेके लिये भूमि दी। काला सागरके पश्चिमी

की ओर संकेत करता है। हम ओलेगको अट्ठासी हजार आदमियोंके साथ विजन्तीनपर आक्रमण करते, उसे कान्स्तन्तिनोपोल राजधानीके फाटकपर विजय-चिह्नके तौरपर अपनी ढाल स्थापित करते, और निम्न (पूर्वी रोम) साम्राज्यको सम्मानहीन संधि करनेको मजबूर करते देखते हैं। ईगर आगे उसे (विजन्तीनको) अपना करद बनाता है। स्वातोस्लाव इस बातको गौरवके साथ कहता है—'ग्रीक मुझे सोना, मूल्यवान् वस्तुएं, चावल, फल और शराब भेजते हैं; हंगरी डोर और घाड़े देती है, रुससे मधु, मोम, समूरी छाल और मनुष्य मिलते हैं।' व्लादिमिर क्रिमिया और लिवानिया (बाल्टिक प्रदेश) को जीतता है, और ग्रीक सम्राट्की कन्याको उसी तरह छीनता है, जैसा कि नेपोनियनने जर्मन सम्राट् से किया।"

मार्क्सके इस उद्धरणसे मालूम होगा, कि रुस १० वीं शताब्दीमें कहाँसे कहाँ पहुंच गया।

३. ईगर रूरिक-पुत्र (९११-४५ ई०)

१०वीं शताब्दीके द्वितीय पादमें ओलेगके स्थानमें उसका भाई ईगर कियेफका महाराज्य बना। उसने अपने भाईकी सफलताओंको आगे बढ़ाकर और भी कितने ही राज्योंको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया, दक्षिणी बृग नदीकी उपत्यकाको जीता और कियेफके शासनके खिन्नाफ धिरोह करने-वाले द्रेव्ल्यानोंको कर देनेके लिये मजबूर किया। ९४१ ई०में ईगरने विजन्तीनके विरुद्ध एक भारी सामुद्रिक अभियान किया। रुसोंने कान्स्तन्तिनोपोलकी बहुत-सी बस्तियोंको ध्वस्त किया, लेकिन अंतमें ग्रीक बेड़ेने उन्हें अपने बंदरगाहसे कालासागरकी ओर खदेड़ दिया। वहांसे जाकर रुसोंने ध्रुव-गमियाके तटको लूटा-बरबाद किया। बड़ी मुश्किलसे ग्रीक-सरकार एक भारी स्थल-सेना भेजकर वहांसे उसे हटानेमें सफल हुई। ईगरके पोत और हथियार अभी बिल्कुल आरंभिक अवस्थामें थे, जबकि "ग्रीक

